आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 328 | ARYA SABHA MAURITIUS | *8th Mar. to 15th Mar. 2016*

हम अपना समस्त जीवन अपनी मातृभूमि की सेवा में समर्पित करें राष्ट्रीय एकता और अखण्डता से

CONSACRONS NOTRE VIE ENTIÈRE AU SERVICE DE NOTRE MÈRE PATRIE EN PRÔNANT L'UNITÉ NATIONALE ET L'INTÉGRITÉ

ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ।।

अथर्ववेद १२/१/६२

Om ! Upasthāste anamivā ayakshmā asmabhyam santu prithivi prasutāh.
Dirgham na āyuh pratibudhyamānā vayam tubhyam balihritah syāma.

Atharva Véda 12/1/62

ओ३म् समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

ऋग्वेद १०/१९१/३

Om ! Samāno mantrah samitih samāni samānam manah saha chittameshām.
Samānam mantramabhi mantraye vah samānena vo havishā juhomi.

Rig Véda 10/191/3

Glossaire / Shabdārth

(i) Prithivi – O mère-patrie!, **te** – toi, **upasthāh** – en ton sein, **asmabhyam** – pour nous, **anamivāh** - en parfaite santé, **ayakshmah** – N'ayant aucune maladie incurable, **prasutah** – produit, créé, **santu** - peut être, peut devenir, **nah** - le nôtre, **āyuh** – l'âge, **dirgham** – pendant longtemps, **pratibudhyamānāh** - étant éveillé, **Vayam** – nous, **tubhyam** – pour toi, pour vous, **balihritah** - qui se sacrifie (pour son pays), **syāma** – devient, restera.

(ii) eshām – leurs, **mantrah** – pensées, **samānah** – soient unies / conformes, **samitih** – assemblée, congrégation, **samāni** – soit commune, **manah** – esprit, **samānam** – soit en harmonie, sur la même longueur d'onde, **chittam** – esprit, raisonnement, **Saha** – étant en accord, peut avoir un but commun, **vah** – toi / vous, **samānena** – commun, **matram** – ayant les mêmes pensées, **abhimantraye** – Moi, Dieu, je vous ai créés, **havishā** – par la nourriture, **juhomi** – Moi Dieu ! Je vous unis en harmonie.

cont. on pg 4 **N. Ghoorah**

कोटिशः धन्यवाद

'वाक्वा आर्यसमाज' और 'प्लैन विल्येम्स आर्य ज़िला परिषद्' ने आर्य सभा के तत्वावधान में 'पंडित काशीनाथ किष्टो आर्यन वैदिक स्कूल' के प्रांगण में 'ऋषिबोध' के उपलक्ष्य में एक चार दिवसीय कार्यक्रम का बड़ा ही सफल आयोजन किया। प्रतिदिन बड़ी ही श्रद्धापूर्वक पुरोहित-पुरोहिताओं और यजमानों ने देवयज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ करके उसका ब्रह्मयज्ञ एवं शांतिपाठ से समापन किया। कार्यक्रम की इतिश्री होने पर दान-दाताओं ने सभी का चारों दिन भोजन से बड़े प्रेमपूर्वक सत्कार किया। दान-दाताओं और आर्यसेवकों की सेवा-भावना को देखकर मन गद्गद हो गया।

श्री अभयदेव रामरूप अपनी पत्नी, श्रीमती पदिमनी रामरूप एवं अन्य सेवक-सेविकाओं के साथ वैदिक धर्म से सम्बन्धित पुस्तक-पुस्तिकाओं की बिक्री में चारों दिन तैनात रहे। उन्होंने चालीस हज़ार रुपये के धार्मिक साहित्य का विक्रय किया। आर्य बन्धुओं ने यह प्रमाण प्रस्तुत किया कि वे सत्संग और स्वाध्याय में सदैव तत्पर रहते हैं। आर्य सभा द्वारा संचालित 'ऋषि दयानन्द संस्थान' के विशाल पुस्तकालय से भी वे पुस्तकें प्राप्त करके स्वाध्याय करते रहते हैं।

इस तरह आर्य सभा यज्ञ-प्रवचन, सत्संग-स्वाध्याय, गायन-वादन, शिक्षण-प्रशिक्षण, तीज-त्योहारों आदि के आयोजन द्वारा अखिल मॉरीशस में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में तल्लीन है। हम अपने सभी कार्यकर्ताओं, पुरोहित-पुरोहिताओं,

शिक्षक-शिक्षिकाओं, गायक-गायिकाओं, पुस्तक-विक्रेताओं, दान-दाताओं और सभा के दफ़्तर के समस्त कर्मचारियों को कोटिशः धन्यवाद करते हैं। पूर्णाशा है कि निस्वार्थ सेवा की यह लगन सबमें सदैव बनी रहे।

डॉ० उदय नारायण गंगू

सम्पादकीय

स्वदेश-प्रेम की भावना

विश्व के सभी देशवासी अपने देश से बहुत प्रेम करते हैं। वे नित्य आपसी प्रेम, सहयोग और एकता के बल पर देश के उत्थान में प्रयत्नशील रहते हैं, ताकि उनका देश उन्नति के शिखर पर बढ़ता जाए। वास्तव में अपने देश की सेवा करना प्रत्येक नागरिक का राष्ट्रीय गुण होता है।

मॉरीशस हमारा प्यारा देश है। भौगोलिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह देश विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत ही छोटा है, परन्तु सभी देशवासियों के अटल प्रेम, एकता और परिश्रम से यह छोटा टापू संसार में अपना नाम रोशन करता जा रहा है। हर एक संकटकालीन स्थिति का सामना करता हुआ प्रगति करता जा रहा है। हमें बड़े ही तप-त्याग एवं पुरुषार्थ से अपने प्यारे देश की छवि उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

हमारे देश के राजनेता-गण अपनी सूझ-बूझ, योग्यता, दूरदर्शिता और अपने सलाहकारों की सहायता से नवीन परियोजनाओं द्वारा देश के विकास में सराहणीय कार्य कर रहे हैं । हमारे उद्योगपति, पूंजीपति, श्रमिक और कारीगर आदि लोग ज्ञान-विज्ञान एवं नवीन तकनीकी के माध्यम से विभिन्न उद्योग-धंधों द्वारा देश की आर्थिक स्थिति में सहयोग दे रहे हैं और बेरोज़गारी को दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। समस्त नागरिक अगर कंधे से कंधा मिलाकर देश-भक्ति की भावना प्रकट करते रहेंगे तो हमारा प्यारा देश हिन्द महासागर में चमकता रहेगा।

मॉरीशस हमारी जन्मभूमि है। हमारा बड़ा सौभाग्य है कि इस सुन्दर, रमणीक और मनोरम टापू में हम पैदा हुए हैं। इस देश के जलवायु, वातावरण और सौंदर्य से अति आनन्दित हैं। सभी देशवासियों के सहयोग और प्रेमभाव से इसकी रौनकता और बढ़ गई है। हम सभी जातियाँ अगर एक दूसरे के धर्म, संस्कृति, भाषा आदि धरोहरों का आदर-सम्मान करते हुए प्रेमभावना प्रकट करते रहेंगे तो हमारे देश का चौरंगा झँडा बड़े गर्व के साथ ऊपर लहराता रहेगा।

हमारे पूर्वज़ पराधीन बनकर लगभग १०० सालों तक फ्रांसीसी शासन में और लगभग १६० वर्षों तक अंग्रेज़ों के शासनकाल में दुख झेलते रहे। वे राष्ट्रीय प्रेम की भावना द्वारा सहनशील बनकर स्वाधीनता की खोज में अपने जीवन तपाते रहे। स्वतन्त्रता के आंदोलन में पूरा सहयोग देते रहे। और १२ मार्च १९६८ ई० को मॉरीशस ब्रिटिश सम्राज्य के बन्धन से आज़ाद हो गया।

आगामी १२ मार्च २०१६ को हमारा राष्ट्रीय पर्व है। उस दिन हम अपने देश का अड़तालिसवाँ स्वतन्त्रता दिवस एवं चौबीसवाँ गणतन्त्र दिवस बड़े ही गर्व के साथ मना रहे हैं। हमें बड़ी उत्सुकता पूर्वक अपने राष्ट्रीय पर्व का भव्य आयोजन करना चाहिए। इस राष्ट्रीय महोत्सव के अवसर पर अपने-अपने घरों के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज फहराना चाहिए। उस दिन यज्ञादि समारोह में भाग लेकर देश के हित निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारा यह स्वर्ग सदृश देश उन्नतिशील होता रहे।

स्वतन्त्रता दिवस के शुभ अवसर पर हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि हमारे देश में आतंकवादी पैदा न हों। तूफ़ान, बाढ़, सूखा, आंधी, भूकम्प और सुनामी जैसे प्राकृतिक प्रकोप हमारे इस सुन्दर देश में न आएँ, किसी प्रकार के संक्रामक रोग उत्पन्न न हों। हम हर प्रकार के वैमनस्य, भेदभाव, द्वेष, विद्रोह आदि से दूर रहे। एकता के बल पर हम प्रगति करते रहें और हमारा देश अन्य देशों के साथ मैत्री-भाव स्थापित करके प्रसिद्धि प्राप्त करता रहे । हमारा यह देश एक चमकता सितारा बनकर हिन्द महासागर में अपनी अद्भुत चमक दिखाता रहे । जय मॉरीशस।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

१. पारितोषिक वितरणोत्सव

हर वर्ष की तरह इस साल भी गुरुवार दि० १८.०२.१६ को दोपहर २.०० बजे वाक्वा-फेनिक्स नगरपालिका हॉल में छठी कक्षा में अव्वल आये बच्चों को सम्मानित किया गया। २८ लड़कों और ३२ लड़कियों को उच्च स्तरीय कॉलिजों में दाखिला मिला। चन्द अध्यापकों को भी शिल्ड प्रदान किये गये।

मौके के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्रालय के स्थायी सचिव श्री आर० मितूक थे। साथ ही ज़ोन के उपनिदेशक श्रीमान तोकुरी और वरिष्ठ इन्स्पेक्टर श्रीमती करमताली थी।

आर्य सभा की ओर से उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम, उपमंत्री रविन्द्र गौड, अन्तरंग सदस्य श्रीमती यालिनी रघु यालापा और श्री रवीनशिवपाल उपस्थित थे। मंच का संचालन किया – श्री कृष्णासामी और श्रीमती मूच्यें। दोनों पंडित काशीनाथ किष्टो आर्यन वैदिक स्कूल के अध्यापक हैं।

२. सामवेद परायण महायज्ञ

सूयाक स्थित स्व० श्रद्धानन्द गुरुकुल में पिछले सोमवार २३ फरवरी २०१६ को सामवेद के १८७५ मंत्रों से महायज्ञ सम्पन्न हुआ प्रातःकाल ६.०० बजे से लेकर शाम के ६.०० बजे तक चलता रहा। सब मिलाकर १२ सत्र रहे और हरेक सत्र के लिए एक पुरोहित थे। महायज्ञ पंडित बितूला जी की देख-रेख में हुआ। मार्के की बात यह रही कि पहली बार इस प्रकार के महान् तपस्वी स्वा० श्रद्धानन्द की जयन्ती मनायी गयी। अभी तक हम बलिदान दिवस ही मनाते आ रहे थे, अब जन्म दिन भी मनायेंगे ।

आर्य सभा की ओर से उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम की ओर से संदेश दिया गया।

३. जन्मदिन

उसी रोज़ कर्मठ आर्य सेवक श्री मूशाय जी का ७५ वाँ जन्मदिन श्रीमती फूलबसिया बाबूराम आश्रम में मनाया गया। पंडिता आरती मंग्रू ने यज्ञ सम्पन्न किया। मुशाय जी की वयोवृद्ध माताश्री के साथ उनके भाई-बहिन और अन्य परिजन आये हुए थे। यज्ञ के तुरन्त बाद भजन-कीर्तन के बाद आर्य सभा के माननीय कोषाध्यक्ष भाई राजेन्द्र प्रसाद रामजी और सभा उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम का आशीर्वचन हुआ।

अन्त में सभी ने मिलकर भोजन किया।

४. भजन-प्रतियोगिता – समापन

मोरिशस आर्य सांस्कृतिक समिति आर्य सभा मोरिशस कला एवं संस्कृति मन्त्रालय व भारतीय उच्चायोग के तत्वावधान में शनिवार २७ फरवरी २०१६ को इन्दिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र फेनिक्स में सपहर २.४५ से लेकर ६.०० बजे तक भजन प्रतियोगिता का समापन-सत्र सम्पन्न किया।

प्रतियोगिता जो गत साल शुरू हुई थी और जो देश के ८ ज़िलों में चली। उसी का समापन समारोह था जिसमें भारतीय उच्चायुक्त और कला एवं संस्कृति मंत्री के साथ आर्य सभा के लगभग सभी अन्तरंग सदस्य उपस्थित थे।

१२ में से १० टोलियों ने भाग लिया और ३ टोलियों को पुरस्कृत किया गया। पहली दूसरी और तीसरी टोली को १५,००० / १०, ००० और ५,००० रुपये का पुरस्कार दिया गया ।

मोरिशस आर्य सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष लेखराजसिंह रामधनी, मंत्री पं० श्याम दायबू और कोषाध्यक्ष पं० रिधो के अथक परिश्रम से ३५० से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

५. विवाह से पूर्व प्रशिक्षण

पिछले रविवार दि० ०१.०३.१६ को प्रातः १०.०० बजे गुडलैण्ड्स के कृषि केन्द्र (Farmers Service Centre) में आर्यन विमेन आसोस्येसन ने एक उद्घाटन समारोह का आयोजन किया था। मुख्य अतिथि स्थानापन्न प्रधान मंत्री ज़ाविये लीक जूवाल थे। चुनाव क्षेत्र नम्बर ७ के सांसद फावदार ने भी अपनी उपस्थिति दी थी। आर्य सभा के माननीय प्रधान एवं उपप्रधान क्रम से डा० रूद्रसेन निऊर और श्री एस. प्रीतम ने अन्य अन्तरंग सदस्यों के साथ समारोह में भाग लिया था।

यज्ञ से प्रारम्भ होकर समारोह महाप्रसाद के साथ समाप्त हुआ। लग तो ऐसे रहा है कि इस प्रशिक्षण कार्य से घरेलू हिंसा, तलाक की दर और अन्य तत्सम्बन्धी समस्याओं का हल निकलेगा।

६. दयानन्द बोध एवं जन्मदिन

दयानन्द जन्म एवं ऋषि बोध इसी मार्च महीने में मनाते हैं जिसे दयानन्द मास मानते आ रहे हैं। गत २९ फरवरी २०१६ को महाऋषि दयानन्द स्कूल ब्वा शेरी में दोनों पर्वों को सम्मिलित रूप में मनाया गया। समारोह का आरम्भ श्री बितुला शास्त्री ने स्कूली बच्चों के साथ यज्ञ द्वारा किया। बच्चों द्वारा सुन्दर एवं रोचक कार्यक्रम पेश किये गये। आर्य सभा की ओर से सभा कोषाध्यक्ष राजेन रामजी, अंतरंग तथा सदस्य बुलाकी एवं गोकुल सभा उप-प्रधान सत्यदेव प्रीतम उपस्थित थे। चुनाव क्षेत्र नं० १३ के सांसद माननीय मानीष गोबिन और सावान ज़िला परिषद् के तरुण अध्यक्ष राजीव लछुमन ने भी अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ाई। सभी दृष्टि से कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज पर प्रह्लाद रामशरण के ग्रन्थ

मूर्धन्य लेखक प्रह्लाद रामशरण द्वारा लिखित ग्रन्थों की संख्या साठ से ऊपर पहुँच गई है, किन्तु उन्होंने स्थानीय आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द पर जो ग्रन्थ लिखे हैं उनका अवलोकन करने से इस देश के सांस्कृतिक आंदोलन को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। उनके निम्नलिखित ग्रन्थ तारीखवार इस प्रकार है :

1. History of Arya Samaj in Mauritius (English) pp 130, 1970
२. डॉ० सर शिवसागर रामगुलाम की राजस्थान-यात्रा, द्रद्र१२४, १९७३
३. Swami Dayanand Saraswati, sa vie et sa profession de foi, pp64, 1982
४. Mauritius Arya Samaj in a Nutshell, pp10, 1984
५. मॉरिशस मंजूषा, द्रद्र१८४, १९८७
६. आर्यसमाज के चमकते सितारे, pp १४०, १९८७
७. Glimpses of Arya Samaj in Mauritius, pp 144, 2001
८. Swami Dayanand and his Impact on Hinduism, pp144, 2001
९. मोहनलाल मोहित परिवार के पत्र, pp ११५, २००१
१०. Mauritius Arya Samaj aur Shuddhi Andolan, pp 104, 2004
11. Teeluck Parsad Callychurn - A dedicated social worker of Mauritius ..... pp 89, 2005
११. मॉरिशसीय आर्यसमाज का (दस्तावेजी) इतिहास, द्रद्र४८४, २०१०
१२. मॉरिशसीय आर्यसमाज की विभूतियाँ, द्रद्र २२६, २०१२

प्रह्लाद रामशरण द्वारा रचित इन बारह ग्रन्थों में छः ग्रन्थ हिन्दी में हैं, पाँच अंग्रेज़ी में और एक फ्रेंच में। ये सारे ग्रन्थ कम मूल्य पर आर्य सभा मॉरिशस में उपलब्ध हैं। हर समाज के पुस्तकालय में इन्हें रखना अनिवार्य है ।

प्रह्लाद रामशरण

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'

प्रियम्वदा जीबन, आर्य भूषण

उन्नीसवीं सदी में भारतवर्ष की सामाजिक स्थिति कुरीतियों का शिकार बनी थी। देश मिथ्या ज्ञान एवं मिथ्या मान्यताओं के गाढ़े अन्धकार से आच्छादित था। मौरवी राज्य के टंकारा नामक गाँव में कर्षण जी तिवारी के गृह पर एक नन्हा सा प्यारा दीपक जला। भारत माता की गोद में सन् १८२४ को एक सुपुत्र का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण उनके बचपन का नाम मूलशंकर रखा गया। माता-पिता पौराणिक धार्मिक स्वभाव के थे। वे अपने माता-पिता की प्रथम सन्तान थे। प्यार से लोग उन्हें दयाल पुकारते थे।

पाँच वर्ष की अवस्था में देवनागरी वर्णमाला पढ़ना आरम्भ किया और कुलरीति की शिक्षा माता-पिता से प्राप्त की। धर्म शास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादिक भी कण्ठस्थ किया करते थे। आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत कराया गया।

बचपन से ही आप मेधावी थे। जिस रात्रि को आपने महाशिवरात्रि त्योहार का व्रत रखा और रात्रि जागरण करने का निश्चय एवं दृढ़ संकल्प कर लिया; उसी रात्रि को आपको सत्य की खोज का बोध प्राप्त हुआ। उसी समय निश्चय किया कि वे सच्चे शिव की खोज अवश्य करेंगे ।

बालक मूलशंकर ने रात्रि जागरण के समय क्या देखा ? अति सोचनीय घटना है। मंदिर के अन्दर और बाहर निस्तब्धता। भारत माता के अशान्त वातावरण के प्रतीक घोर तिमिरावरण की वह महा निस्तब्धता जब मानवमन को आतंकित कर रही थी, तब उसी वक्त चौदह वर्ष के बालक के मन में अकस्मात् उठे एक अभिनव प्रश्न ने अंधकार के उस आवरण में दरार पैदा कर दी ।

सच्चे शिव दर्शन की लालसा के कारण बालक मूलशंकर अकेला जाग रहा था और शिवलिंग की ओर देख रहा था। तब कई चूहे बाहर निकले और महादेव की पिण्डी पर उछल-कूद मचाने लगे। शिव जी पर चढ़कर चावल तथा अन्य नैवेद्य खाने लगे। इसी दृश्य या घटना को नज़रअन्दाज़ कर मूलशंकर के कोमल हृदय पर अनेक प्रश्न पैदा हुए।

मूषकों के आश्चर्य भी दृश्य को देखकर मन में अनेक प्रश्न उठने बालक मूलशंकर के लिए साधारण बात नहीं थी। यों कहिए कि भारत माता की दुर्दशा एवं अंधविश्वास का प्रश्न था। उसी समय सत्य सनातन वैदिक धर्म एवं सत्य की खोज की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। क्योंकि बालक ने दिन में शिवपुराण की पुण्य कथा में सुना था कि शिवजी त्रिपुरारि हैं। त्रिशुलधारी है और दुर्दान्त, दैत्य दलनकारी देवाधिदेव महादेव हैं। तो वे इतने अशक्त क्यों हो गये ?

भगिनी और चाचा की मृत्यु से तो आप को अपने जीवन पथ में एक नई चेतना जागृत हुई । इससे प्रेरित होकर आपके कोमल हृदय में अमर पद प्राप्त करने की प्रबल इच्छा जागी । इस तरह वे २१ वर्ष की अवस्था में माता-पिता के संकल्प की परवाह न कर एक दिन शौच के बहाने गृह त्याग कर अपने स्वतन्त्र पथ के यात्री बन गये । तत्पश्चात् मथुरा में उनकी भेंट दण्डी विरजानन्द जी से हुई। दण्डी विरजानन्द जी को आप ही जैसे शिष्य की तलाश थी। उनके सम्पर्क में रहकर आपने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्तसूत्र तथा अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया। विद्या के गहरे अध्ययन के पश्चात् आप गुरु से आशीर्वाद लेकर मैदान में उतर आये। मूलशंकर से आप ऋषि दयानन्द के नाम से प्रचलित हुए ।

अतः उनके जीवन चरित्र से पता चलता है कि, उन्होंने निर्भयता और निःस्वार्थता को अपना कर मानव कल्याण के वास्ते अपने सम्पूर्ण जीवन की आहूति दे दी । इस तरह अमरता को प्राप्त किया। किसी कवि ने उनके बारे में क्या ही खूब लिखा :

धन्य है तुझको ऐ ऋषि तू ने हमें जगा दिया ।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया ।।

ऋषि जी का सत्य वेद था...वैदिक सत्य था...व्यक्तिगत नहीं था। वे दूरदर्शी थे, स्वार्थी नहीं । शायद यही कारण या 'मैं' का प्रयोग नहीं करते थे। यही उनके विशेष दिव्य गुण था।

परम पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज आधुनिक युग का अखण्ड विद्वान् एवं वैज्ञानिक कहना चाहिए। विश्व के समाज सुधारकों में उनका स्थान अग्रगण्य है ।

"...None can destroy iron, but its own rust can!
Likewise iron can destroy a person, but his own mind set can! ..."

Ratan Tata, Indian businessman, investor, philanthropist and chairman Emeritus of Tata Sons

Germany is a highly industrialized country. In such a country, many will think its people lead a luxurious life.

When we arrived at Hamburg, my colleagues walked into the restaurant, we noticed that a lot of tables were empty. There was a table where a young couple was having their meal …only two dishes and two glasses of water on the table. I wondered: "such a simple meal is unromantic …the girl will leave this miserly guy."

There were a few old ladies on another table. When a dish is served, the waiter would distribute the food for them …they would finish every bit of the food on their plates.

As we were hungry, our local colleague ordered more food for us ...we were leaving with about one third of un-consumed food on the table …the old ladies came to us …they expressed grief about our wasting so much food.

My colleague replied: "We paid for our food …the food we left behind is none of your business!"

The old ladies were furious …one of them immediately took her hand phone out … made a call. After a while, a man in uniform from Social Security arrived ...taking cognisance of the dispute, he issued us a 50 Euro fine ...we all kept quiet!!

The officer told us in a stern voice: *"Order only what you can consume …money is yours …but resources belong to the society …there are many others in the world who are facing shortage of resources …you have no reason to waste resources."*

The mind set of people of this rich country put all of us to shame …we really need to reflect on this …we are from country which is not very rich in resources … when we give others a treat we boast ourselves by ordering large quantity of food …and much of it goes waste.

(Courtesy : Internet)

We need to think seriously about changing our bad habits. Attitudinal change is possible ...so is preventing the future generations from being insensitive.

Contributed by

Yogi Bramdeo MOKOONLALL, *Darshanacharya*
Arya Sabha Mauritius

भारतीय छः दर्शनों का परिचय

आचार्य विरजानन्द उमा, प्रधान पुरोहित मण्डल

भारतीय दर्शनों की सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यवहारिक पक्ष है। उसका उद्देश्य नाना प्रकार के दुखों से पीड़ित मनुष्यों को, अविद्या, राग-द्वेष आदि क्लेशों से छुड़ाकर मोक्ष प्राप्ति करना है। वस्तुतः हमेशा से मनुष्यों की वृत्ति, रीति और संगति संकल्प और विकल्प के बीच में अटकती है और भटकती है या संभलती और सुधरती है। दर्शनों का लक्ष्य है मनुष्य मात्र को सही मार्ग दर्शाना। पशु और मनुष्य में यही अन्तर है, एक तो **'पश्यति'** केवल देखता है दूसरा **'दृश्यते'** दर्शन करता, (observe) करता है। शास्त्र के अनुसार दर्शन का अर्थ है – **'दृश्यतेऽनेन इति दर्शनम्'** जिसके द्वारा देखा जाए। क्या देखा जाए ? वस्तु का तात्विक एवं सात्विक रूप। इस जगत का सच्चा स्वरूप क्या है ? यह जड़ है या चेतन ? इस संसार में हमारा कर्त्तव्य क्या है? परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? जीवन को श्रेष्ठ सुन्दर और सुखी बनाने के साधन क्या है ? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का कार्य है। अब क्रमशः दर्शनों का परिचय दिया जाएगा।

१. न्याय दर्शन का परिचय

न्याय दर्शन के आदि प्रवर्तक महर्षि गौतम है। महर्षि गौतम से पूर्व कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं जिसमें तर्क प्रमाणवाद आदि का नियमबद्ध विवेचन हो। इस ग्रन्थ में पाँच अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में दो-दो आह्निक है और ५३८ सूत्र हैं ।

प्रथम अध्याय में उद्देश्य तथा लक्षण और अगले अध्यायों में पूर्वकथन की परीक्षा की गई है। दार्शनिक साहित्य में न्याय का अर्थ है - **'नीयते प्राप्यते विविक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्यायः'** - अर्थात् जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि की जा सके, जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धान्त पर पहुँचा जा सके, उसी का नाम न्याय है ।

२. वैशेषिक दर्शन का परिचय

वैशेषिक दर्शन का प्रणेता महर्षि कणाद है। खेतों से अन्न के कण बीनकर अपनी उदर-पूर्ति करने के कारण उनका यह नाम पड़ा है। उसमें १० अध्याय हैं, प्रत्येक में दो-दो आह्निक हैं। सूत्र संख्या ३७० है। महर्षि जी ने पहले अध्याय में अपने ग्रन्थ का उद्देश्य बताया है। वह उद्देश्य है निश्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति। वैशेषिक का अर्थ है - **विशेष पदार्थमधिकृत्य कृतं शास्त्रं वैशेषिकम्** **विशेष** (पृथिव्यादि परम सूक्ष्म्) भूत तत्वों का नाम विशेष है। नामक पदार्थ को मूल मानकर प्रवृत होने के कारण इस शास्त्र का नाम वैशेषिक है ।

३. सांख्य दर्शन का परिचय (रचयिता महर्षि कपिल)

अध्याय छः – सूत्र संख्याः - ४५१ और प्रक्षिप्त श्लोकों को मिलाकर ५२७ है। इस दर्शन का उद्देश्य प्रकृति और पुरुष की विवेचना करके उनके अलग-अलग स्वरूप को दिखलाना प्रायः गणनार्थक 'संख्या' से सांख्य शब्द की व्युत्पति मानी जाती है, परन्तु वास्तविक अर्थ है विवेकज्ञान। 'संख्या' शब्द सम्पूर्वक **'चक्षिङ़ः ख्याञ्'** धातु से बनता है। जिसका अर्थ है 'संख्यक् ख्यानम्' - अर्थात् सम्यक् विचार। इसी को विवेक बुद्धि कहते हैं । जब मनुष्य विवेक द्वारा यह जान लेते हैं कि पुरुष आत्मा और परमात्मा प्रकृति से भिन्न है तब उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। 'ईश्वरसिद्धेः' आदि सूत्रों को देखकर कुछ लोग महर्षि कपिल को नास्तिक कहते हैं परन्तु इस सूत्र में तो उन्होंने जगत् के उपादान कारण को असिद्ध बताया है ।

'स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता' आदि सूत्र महर्षि कपिल को परम आस्तिक बता रहे हैं।

योग दर्शन का परिचय

योग दर्शन महर्षि पतंजलि की रचना है। इस ग्रन्थ के चार पद हैं । सूत्रों की संख्या १९४ है। आकार की दृष्टि से यह दर्शनों में सबसे छोटा है परन्तु महत्व की दृष्टि से सब दर्शनों में महान् है। योग शब्द का अर्थ अनेक है। योग शब्द का अर्थ है जोड़ना, मिलना-मिलाना आदि। युजिर् यागे युज् समाधौ से योग शब्द सिद्ध होता है । योग दर्शन में यह शब्द दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त है ।

मीमांसा दर्शन का परिचय

मीमांसा दर्शन का प्रवर्त्तक महर्षि जैमिनि है। इस ग्रन्थ में बारह अध्याय हैं। जिसमें साठ पाद हैं, सूत्रों की संख्या २७३१ - आकार में से सबसे बड़ा है। इस दर्शन का विषय है धर्म। धर्म का ज्ञान वेदाध्ययन से होता है, क्योंकि धर्म के विषय में केवल वेद प्रमाण है । धर्म अथवा वेदार्थ विषय विचार को मिमांसा कहते हैं। इस दर्शन में यज्ञों की दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या की गई है।

हमारा स्वतांत्र देश

भगवन्ती घूरा

सौभाग्य से हम अड़तालीस साल से एक स्वतंत्र देश में संतुष्ट और कुशल जीवन व्यतीत करते हुए, स्वतन्त्रता पूर्वक जी रहे हैं। हम अगले बारह मार्च को अपने देश का स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वक मनायेंगे।

अपनी मातृ-भूमि के प्रति प्रेम प्रकट करने के लिए चौरंगा झण्डा फहरायेंगे । इसकी समृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करेंगे। शुभ संदेश सुनने और सुनाने का अवसर होगा, जिससे हमारे बच्चे भी प्रेरित होंगे। उस विशेष अवसर पर मनोरंजन के वास्ते भी योजनाएँ बनाएँगे ।

मॉरीशस है हिन्द महा सागर की कुंजी
यह देश है हमारे पूर्वजों की जमा पूँजी ।
कठिन परिश्रम और तप त्याग की है यह निधि
इस धरोहर की करनी है वृद्धि।
बहुजातीयता से यह देश है धर्म संस्कृति का धनी ।
ज्ञान-विज्ञान से उज्ज्वल है जीवन की गति।
परस्पर समझौते से बनी रहती है शान्ति।
सदा फलता-फूलता देश के हैं हम अभिलाषी
बिन्दु स्वरूप स्थित है हिन्द महा सागर में यह सितारा ।
जल यात्रियों के लिए बना हुआ है आँखों का तारा ।
पर्यटकों को यह देश लुभाता और लगता प्यारा।
प्राकृतिक सौंदर्य से है सजे यह बड़ा ही सुहावना।
शुद्ध जल-वायु की है सदा बहती धारा ।
उत्पादक धरती प्रदान करती है उपयुक्त खाना ।
यह देश है हमारी शान, आदर्श देश भक्त बनकर बुलंद रखना है ।

एक मुट्ठी आसमा पाकर इस आज़ाद देश में हमारा जीवन है सार्थक, अब तन, मन, धन से रखना है इसका मान। ईश्वर कृपा से बना रहे स्वाभिमान। सदा ऊँचा रहे यह झण्डा ।

मॉरीशस की स्वतंत्राता के पीछे छिपे संघर्ष

पार्वती पुण्या, B.A. II, Student

१२ मार्च को सभी लोग स्वतंत्रता एवं गणतंत्र दिवस की वर्षगाँठ मना रहे हैं। शिक्षण संस्थानों में तथा अन्य संस्थाओं में, हमारा चौरंगा झंडा लहराया जाएगा। आज ही के दिन, सभी लोग मनमें उत्साह लिए, एक नई उमंग के साथ अपने देश मॉरीशस को सलाम कर रहे हैं।

लेकिन क्या किसी ने स्वतंत्रता दिलवाने के लिए, उन महान् पुरुषों के त्याग, श्रम, धैर्य के बारे में सोचा ?

मॉरीशस तो पहले एक ब्रितिश उपनिवेश था। जब गोरों का शासन था तो वे मॉरीशस टापू को हथियाना चाहते थे। सभी लोगों पर शोषण करते थे। एक समय ऐसा आया कि काम करने के लिए लोगों की कमी पड़ गई, तो वे भारत से 'गिरमिटिया मज़दूरों' को लाए। लिखित इकरारनामे खेती आदि में काम करने के लिए हिन्दुस्तान से 'कुली' आते थे। उनको 'गिरमिटिया कुली' कहा जाता था। अंग्रेज़ी एग्रीमेन्ट 'Agreement' शब्द का बिगड़ा रूप 'गिरमिट' है। उसमें लिखा जाता था कि उनको ३ या ५ सालों तक खेती या अन्य स्थानों पर काम करना होगा, ५ अथवा ६ रुपए मासिक वेतन मिलेगा तथा चावल, दाल, तेल, नमक आदि खाने की चीजें मिलेंगी और अगर अवधि समाप्त होने पर उन्हें हिन्दुस्तान लौटना हो तो जहाज़ का किराया सरकार की ओर से मिलेगा। लेकिन यहाँ पर आने के पश्चात्, रहने का कुछ प्रबंध नहीं होता था, दवा-दारू का कोई ठिकाना नहीं था और न ही काम के कोई नियम बने हुए थे। सन् १८३४ ई० तक जो कुली आया करते थे उनको असह्य यातनाएँ भुगतनी पड़ती थीं। सरकार उनके लिए कुछ भी न कर सकती थी।

कहते हैं कि रात को दो बजे कुली को उसकी झोंपड़ी में से खींचकर काम पर ले जाया करते थे और ७ या १० बजे रात्रि उसको छुट्टी मिलती थी। बूढ़े कुली कहा करते हैं कि –

'कोठी के कर्मचारी गाड़ी में डंडों को
लादकर बाहर निकाला जाता था।'

एक दिन की अनुपस्थिति के लिए
दो दिन की तलब काटी जाती थी।

इसका 'डबल कट' (double cut policy) दूनी काट कहते हैं । उनपर बाँसों की बौछारें बरसाई जाती थीं। भगवान ही जाने की और कितने ज़ुल्म सहे होंगे इन लोगों ने !! लेकिन उन भारतीय प्रवासियों ने इस अनजान देश को अपना मानकर, इन सब अत्याचारों को सहकर, मॉरीशस को अपने खून-पसीने से स्वर्ग बनाया ।

इसके अतिरिक्त जब सन् १९०१ में महात्मा गांधी मॉरीशस पधारे थे, तब भी देश की दशा कुछ ठीक नहीं थी। उन्होंने मणिलाल डॉक्टर को भेजा। ऐसी दयनीय परिस्थिति में इस निर्भीक योद्धा ने हमारे पूर्वज़ों की सेवा की थी। कोई ५ वर्षों तक यहाँ की विषम परिस्थितियों में संघर्ष करके, मणिलाल डॉक्टर ने एक धार्मिक संगठन, एक शैक्षिक संगठन, एक समाचार पत्र, एक छापाखाना भारतीय प्रजा को देकर यहाँ से सन् १९११ से प्रस्थान किया था।

एक और महान् पुरुष हैं जिन्होंने मॉरीशस की स्थिति को सुधारा । डॉ० शिवसागर रामगुलाम जी जो प्रवासी भारतीयों का एक अद्भुत राजनेता थे, मॉरीशस के इतिहास में उच्च स्थान रखते हैं । मज़दूर दल के नेता बनकर, उन्होंने महात्मा गांधी जी के मार्ग पर चलकर, शांतिपूर्ण तरीके से ब्रिटिश सरकार के सामने अपनी माँगें पेश करते रहे । इसके परिणाम स्वरूप, संविधान के जरिए देश को १२ मार्च १९६८ को आज़ादी मिली ।

देश को चौरंगा झंडा मिला और मॉरीशस एक राष्ट्र के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ राष्ट्र कुल, गुट निरपेक्ष संगठन और अफ्रीकी एकता संगठनों जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में अपना नाम लिखवा पाया।

उपर्युक्त तथ्यों से हमें आभास होता कि किस प्रकार इस छोटे से टापू को, मॉरीशस को, अन्ततः सही अर्थों में आज़ादी मिली। मैं उन सभी लोगों को तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ जिनके कारण हम आज आज़ाद हैं।

हम अपना समस्त जीवन अपनी मातृभूमि की सेवा में समर्पित करें राष्ट्रीय एकता और अखण्डता से

cont. from pg 1

Avant-Propos

Les deux versets vont de pair avec le thème principal : le patriotisme et la solidarité nationale.

Le Patriotisme

Quand on pense au patriotisme, deux mots nous viennent à l'esprit : (1) la mère patrie, et (2) les patriotes.

Puisque notre mère patrie nous fait vivre (nourrit), nous devons être redevable envers elle et lui témoigner notre profonde reconnaissance.

Il faut que nous ayons un élan de solidarité envers elle, en lui offrant notre service désintéressé. Les patriotes et les citoyens intègres, c'est-à-dire, les vrais fils du sol, doivent apporter leur contribution, même la plus modeste, afin d'assurer sa sécurité et sa prospérité. Ils doivent se tenir aux aguets pour sa protection.

Pendant que les patriotes s'évertuent à faire prospérer le pays, il y a toujours des traitres, des ennemis, des réactionnaires, des fossoyeurs de la société, des terroristes, des démagogues, des dictateurs, des politiciens sans scrupule et assoiffés de pouvoir, et autres qui veulent tout accaparer (le pouvoir et toute la richesse). Ils tiennent le peuple en otage, et mettent le pays à genoux pour leur bien être personnel. Le travail des patriotes pour assainir une telle situation est ainsi un grand défi. L'histoire témoigne, qu'à chaque fois ils ont été à la hauteur de leur tâche pour sauver le pays.

Les Védas nous apportent un message d'espoir pour le salut de notre patrie. Ils nous mettent en garde et éveillent en nous le patriotisme. Ils nous rappellent nos devoirs envers notre pays et la protection de ses intérêts. Ils nous exhortent à consacrer notre vie au service de notre patrie, à se sacrifier pour sa défense et promouvoir l'unité nationale.

La philosophie védique traite de l'unité des pensées, des paroles et des actions. Les Védas nous enseignent que la fondation de l'édifice d'une nation solide se repose sur l'unité nationale et l'intégrité de ses citoyens, voire la concordance des cœurs et des pensées, des objectifs, de la volonté, de la détermination, des aspirations, des actions, de la culture et de la convention (discipline norme).

Les Védas conseillent aux hommes de s'assembler sur une même plateforme, de penser ensemble, de travailler en étroite collaboration, d'avoir les objectifs communs, la même détermination et la même ultime destination.

L'unité nationale comme préconisée par les Védas est le seul remède contre tous les maux, tous les malheurs, tous les problèmes, tous les fléaux et toutes les maladies sur la terre.

Interprétation / Anushilan

Le premier verset, puisé de l'Atharva Véda, n'est qu'une prière dédiée à notre mère patrie !

"O mère patrie ! Que tu sois toujours épargnée des maladies et des infections dangereuses ou fatales!
Que nous ayons une longue vie prospère et heureuse.
Que nous puissions consacrer nos vies entières à ton service !
Que nous puissions sacrifier nos vies pour ta sauvegarde !"

Dans le deuxième verset en provenance du Rig Veda, Le Seigneur s'adresse à toute l'humanité à propos de l'unité nationale comme suit :-

"Que vos pensées aillent dans la même direction !
Que vous vous regroupiez dans une seule congrégation !
Que vous apparteniez tous à la même fraternité !
Que vos esprits trouvent toujours un accord commun !
Que vos cœurs travaillent en harmonie parfaite pour atteindre vos objectifs idéals !

En dernier lieu, Le Seigneur nous conseille :

"O les hommes ! Je vous unis tous par ce lien sacré d'affinité ! Que vos pensées, paroles et actions soient en harmonie !"

WHERE WILL I BE ABLE TO SEE GOD IF THERE IS GOD THEN I MUST SEE HIM

Vinai Ramkissoon, Yoga Instructor

"Rishi Bodh Utsav is an occasion of no comparison in modern history. On this day we celebrate the creative might and energy of a lion among men. The ten principles of Arya Samaj is as great as today as were in yester years and shall remain good for the 21st century also" wrote Pundit Mohinder Bhalla, a Registered Vedic Missionary of Ontario Canada in an article highlighting the importance and vision of Arya Samaj.

Little things leads to discoveries and inventions that change the way of life of a community and the world! Great minds have a deeper understanding of incidents. Small events have greatly influenced civilisation.

Renowned scientist, Isaac Newton was seated in the shade of an apple tree when suddenly an apple fell from the tree. Instantly,questions arose in his mind as to why objects always fall to the ground! That ignited his mind and resulted in the world benefitting from the discovery of the law of gravitation.

James Watt, aged 12 years was seated in a kitchen in company of his aunt. He was fascinated with the steaming tea kettle. The boilling water caused the lid of the kettle to jump up and down. He stared at the kettle during a long time. His aunt requested him to stop wasting his time, but James was too fascinated with the power of the steam from the kettle. James Watt inquisitive mind led him to invent the steam engine changing the course of development in the world.

Moolshankar (later Maharishi Dayanand) aged 14 years, was awestruck at the unusual sight on the idol of Shiva in the temple on the longest night of Mahashivaratree. A day before during a Katha he was told about the dreadful power of Lord Shiva, god of death, his weapon the trishul, his means of transport, the bull and his supremacy over the universe.

An intelligent and well educated boy, Moolshankar had at the age of 10 memorised the mantras of Shukla Yajurveda. He had also read some books on Sanskrit grammar. Born in an orthodox Shaivite family he was brought to worship the idol of Mahadeva, Lord Shiva.

At the insistence of his father, he kept vigil on the night of Mahashivaratree, fasting. As a fervent devotee of Lord Shiva, he attended the rituals of the first and second *prahar* of the night. In the advanced hours of the night the devotees and the pujari felt asleep. Young Moolshankar kept vigil to get *'darshan'* of Shiva. He was surprised to see rats interfering with the idols. Doubts arose in his tender mind as to the power believed to embody the idol of Shiva. He woke up his father to get answers to his questions but the father could not quench his thirst for knowledge about the incident. His mental and spiritual faith was shattered. He broke his vow and went home where his mother fed him with sweets . Pertinent questions such as: "Where will I be able to find God? If there is a God then I must see Him!"

A turning point in the life of Moolshankar

The factual interpretation of the events led Moolshankar to conclude that the idol was not the all-powerful Lord Shiva as described by his father. That was a turning point in his life. Many others must have seen a rat jumping on idols and eating off the Prasad; an apple falling from a tree; a lid moving up and down from a boiling kettle; but dismissed those incidents or said to themselves that they would think over at a later time… and that later time never comes! They never delved to search for the real meaning from such incidents. However great minds such as Newton, Watt and Moolshankar applied their minds and gave us the logical interpretations.

Like discoveries and inventions increase welfare in society, Moolshankar's englightment on this night was set to uplift the physical, moral and spiritual standards of all. After acquiring knowledge about the real concept of God and the Vedic philosophy he wrote The Light of Truth and set up Arya Samaj with a view to serve humanity, to educate people to accept one God as the Creator and Ruler of the Universe, and to free mankind from the shackles of ignorance, superstitions and other social evils. He took the VEDAS as his rock foundation and inspiration for his works.

The MahaShivatratree event at the temple and the death of his beloved sister and uncle had great impact on Moolshankar. At the age of 22years he finally run away from home, escaping the vigilance of guards hired by his father.

He was of amazing strength and energy. He marched from village to village, crossing rivers, hills, forests, snowy regions, desserts, places of worships, river banks in search of the eternal God. He met several yogis, lived in huts, temples, etc. He read several scriptures, learned and practised yoga for 15 years. He saw the major weaknesses prevailing in the Hindu society – the blind faith, evil practices and superstitions plaguing society.

The culture of the Aryans of yore was buried. Human society had degenerated to the lowest degree. Finally he met the Guru of his dreams, a virtuous, pious and disciplined Sanyasi, Swami Virjanand. Aged 81, blind from his tender age, the latter enjoyed high esteem as famous Sanskrit scholar and grammarian with unshakeable faith in the Vedas and books composed by Rishis of yore. Swami Dayanand stayed in Mathura and studied under the guidance of Guru Virjanand who was running a Vedic school in Mathura After 3 years of study he sought leave from Guru Dandi Virjanand. Swami Dayanand took a vow to spread truth, the knowledge of the Vedas, re-establish the Vedic religion and fight against blind faith. He obeyed his Guru till his last.

'Bow to ideal not idols' was the preaching of Maharishi Dayanand. The Vedas, Upanishads and Shastras teach about the attributes of God as the Supreme Being, Satchidanand (sat-self-existant; chitta- All-conscious; and Anand - All bliss). The holy books condemn the worship of objects in the place of God. In the Satyartha Prakash Swamiji states that *"idol worship is not a ladder-step but an abyss which deprive the soul of true knowledge, right action and pure worship."*

Dr. O.N. Gangoo, the actual President of Arya Sabha Mauritius, has in the book 'An Abridged Version –Satyartha Prakash' exposed the reader, in simple English terms, to the various names of the Supreme Being of which the highest name is "OM". Swami Dayanand Saraswati has written this chapter to show that though God has innumerable names. Names are many BUT God one and the only one.

The many forms …etc., are the creations of ignorant Indian and Western scholars who misinterpreted the Vedic Mantras, isolating each attribute of God and allocating each attribute to a new God.

Let us join efforts to revive Vedic ideology, to cure our sick society and spread the fragrance and the message of love, peace of Arya Samaj throughout the World for the welfare of mankind.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

वार्षिक बृहदाधिवेशन

To All Life Members, Representative Members and Secretaries of Arya Samajs & Arya Mahila Samajs
(branches of Arya Sabha Mauritius)

सेवा में सादर सूचित हो कि रविवार ता० २७ मार्च २०१६ का १.०० बजे दिन में आर्य सभा मोरिशस का वार्षिक बृहदाधिवेशन, आर्य भवन, १, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई में होगा ।

अतः ठीक समय पर पधारने की कृपा करें । आप की उपस्थिति अति आवश्यक है।

कार्य-सूची निम्न प्रकार है : -

१. प्रधान द्वारा स्वागत भाषण एवं सन् २०१५ की रिपोर्ट ।
२. गत बृहदाधिवेशन के कार्य-विवरण को सुनना और सम्पुष्ट करना ।
३. २०१५ के वार्षिक वृतान्त तथा आय-व्यय को सुनना तथा सम्पुष्ट करना ।
४. २०१६ के वार्षिक अनुमानित आय-व्यय बजट पर विचार करना और अनुमोदित करना ।
५. २०१६ के लिए अन्य भावी कार्यक्रमों के साथ निम्नलिखित योजनाओं को स्वीकार करना :-
   (क) ज. बालगोबिन्द आश्रम के विस्तार-कार्य ।
   (ख) गयासिंह आश्रम में मरम्मत-कार्य ।
   (ग) डा० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम का विस्तार-कार्य ।
   (घ) कालबास में महिला केंद्र का निर्माण ।
   (ङ) सभा की खाली ज़मीनों पर कृषि योजना ।
६. कोई अन्य विषय – (प्रधान के अनुमति से) ।
७. शान्ति पाठ ।

ANNUAL GENERAL MEETING

You are kindly requested to attend the Annual General Meeting to be held on Sunday 27 March 2016 at 1.00 p.m. at the Arya Bhawan, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis.

AGENDA

1.0 Welcome Address and President's report for the year 2015.
2.0 To hear and confirm the Minutes of Proceedings of the previous Annual General Meeting.
3.0 To hear and approve the Annual Report and the Statement of Accounts for the year 2015.
4.0 To consider and approve the Estimate Budget for the year 2016.
5.0 To approve the programme of works for the year 2016, amongst others :
   (a) Extension of J. Balgobeen Ashram.
   (b) Renovation of Gayasingh Ashram.
   (c) Extension of Dr Chiranjiv Bhardwaj Ashram, Belle Mare.
   (d) Construction of Women Centre at Calebasses.
   (e) Bio-Agriculture Project on the land of the Sabha.
6.0 Any Other Business (AOB) with the consent of the chair.
7.0 Shanti Path (Prayer) and adjournment.

H. Ramdhony, *Secretary*

08 March 2016

PRAYER FOR THE WELFARE OF THE NATION

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्य शुरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम् ।।

Ā brahman brāhmano brahmavarchasi jāyatamā rāshtre rājanyah shura ishavyotivyādhi mahāratho jāyatām dogdhri dhenurvodhānadvānāshuh saptih purandhiryoshā jishnu ratheshthāh sabheyo yuvāsya yajamānasya viro jāyatam nikāme nikāme nah parjanyo varshatu phalavatyo na oshadhayah pachyantām yogakshemo nah kalpatām ll *(Yajur Veda, 22.22)*

English meaning

O All-knowledgeable, Omniscient, Supreme Lord!

May

- Your grace and blessings always be with our Motherland
- Men and women be of high learning and spiritual lustre
- Soldiers be valiant, strong-minded and protect the country
- Statesmen be brilliant and lead it to peace and prosperity
- Agriculture yield abundant crops, fruits, medicinal plants
- Cows provide us with lot of milk
- Other animals (oxen, horses, etc.) and equipment (horsepower) assist us in agriculture, transport, industry
- Womenfolk, the very foundation of our society, be virtuous, valorous, educated and cultured
- Youth be enthusiastic, considerate, patient and persevering
- We all be truthful, faithful, industrious, skilled and hard working
- Rain showers be profuse and timely
- We be inspired to judiciously use resources
- Our country and its citizens be protected from epidemics, calamities, suffering
- Each and every citizen uphold his duties and responsibilities
- We be righteousness in our thoughts, speech and actions at all times
- We steadily progress towards physical, moral / spiritual and social prosperity, well-being
- We achieve peace, peace and peace though all our endeavours!

Yogi Bramdeo MOKOONLALL, Darshanāchārya, Arya Sabha Mauritius, Port Louis